बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का मंच

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा

1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-61 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | दिसंबर-जनवरी, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

बढ़ते कदम के सदस्यों ने विश्व समुदाय से की अपील

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने दक्षिणी दिल्ली में बैठक का आयोजन किया जिसमें बढ़ते कदम के सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बिगडती स्थिति और उनकी अनदेखी पर चिंता जाहिर की बालकनामा की टीम ने इस मीटिंग का आवरण किया।

प्रस्तुत हैं उसके महत्वपूर्ण अंशः

● विश्व में लगभग 15 करोड़ सड़क एवं कामकाजी बच्चे है।

● विश्व में 196 देशों में लगभग 130 देशों में सड़क एवं कामकाजी बच्चे है।

● यह बच्चे असमानता, भुखमरी, बेघर, अशिक्षा, तिरस्कार, शोषण के शिकार हैं। अभी तक सड़क एवं कामकाजी बच्चों को लेकर विश्व के देश एकमत नहीं हैं और न ही इनकी संख्या का कोई सही अंदाजा है जिसके चलते सड़क एवं कामकाजी बच्चों में भी खासकर लड़कियों की स्थिति बेहद खराब है। इसलिए बालकनामा टीम ने विश्व समुदाय से निम्न मांग रखी हैं।

● सड़क एवं कामकाजी बच्चों की उपस्थिति को लेकर सभी देशों में एक मान्यता मान्यता मिले और एकमत बने।

● इनकी गणना हो और उनकी समस्याओं एवं संख्या के अनुरूप उनके लिए योजनाएं बने।

● सड़क एवं कमकाजी बच्चों के चारो अधिकारो क्रमशः जीने का अधिकार एसुरक्षा का अधिकार एविकास का अधिकार एवं भागीदारी का अधिकार सुनिश्चित हो।

बढ़ते कदम की अध्यक्ष 16 वर्षीय ज्योति ने प्रसन्ता जाहिर की कि जल्द ही युनाईटेड नेशन में भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों का उल्लेख हो सकता है।

बढ़ते कदम ने गणतंत्र दिवस पर की मांग

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को भी मिले बहादुरी पुरस्कार

बालकनामा ब्यूरो

गणतंत्र दिवस के अवसर भारत सरकार द्वारा हर साल जो बच्चे किसी की मदद करते हैं, उनको बहादुरी के पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसके विपरीत एक सच्चाई यह भी है कि बहुत से सड़क एवं कामकाजी बच्चे कठिन परिस्थितियों में रहते हैं और बहादुरी से इन परिस्थितियों का सामना करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इन बच्चों की निर्भयता और बहादुरी को अनदेखा कर दिया जाता है। उनके निःस्वार्थ कार्यों और परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता उन्हें किसी सुपरमैन से कम नहीं आंकती और इसी वजह से ये बच्चे निम्न वर्ग के हीरो बन गए हैं।

तुलसी और पूजा

14 वर्षीय मो. अली ने एक बच्चे की जान बचाई। वह जब सेंटर से पढ़कर आ रहा था तो उसने देखा कि चार लोग एक बच्चे को पीट रहे हैं और उसके पैसे छीनने का प्रयास कर रहे थे। वह दौड़कर उसके पास

शेष पृष्ठ 6 पर

बालकनामा अखबार का दिखा असर

लखनऊ में सड़क एवं कामकाजी बच्चों को पंहुची राहत

ज्ञातव्य हो कि बालकनामा अखबार के अंक 54 में नवाबों की नगरी लखनऊ में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दुर्दशा पर खबरें प्रकाशित की गई थी, जिसको पढ़ने के बाद वन वर्ल्ड फाउंडेशन और सामाजिक संस्था चेतना ने मिलकर लखनऊ में 6 स्थानों पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए कार्य करना प्रारम्भ किया। संस्था के सहयोग से अब तब लगभग 300 बच्चों को शिक्षा से जोड़ा जा चुका है. इसके साथ ही इन बच्चों को बाल अधिकारों, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं, पुलिस स्टेशन विजिट, एक्सपोजर विजिट इत्यादि के माध्यम से समाज की मुख्यधारा से जोड़ा गया है.

ठंड ने किया स्ट्रीट चिल्ड्रन के जीवन को बदहाल

बालकनामा ब्यूरो

एक ओर जहां कड़ाके की ठंड में सड़क एवं कामकाजी बच्चों को खुले आसमान के नीचे रात गुजारनी पड़ रही है, वहीं दूसरी ओर नोटबंदी ने इनका धंधा पानी चैपट कर रखा है। बालकनाम के पत्रकार ने जब सड़क एवं कामकाजी बच्चों से पूछा कि इतनी ठंड में आप कैसे अपना बचाव कर रहे हैं तो भीख मांगने और कबाड़ा चुनने वाले बच्चों ने बताया कि हम एक ही कंबल में चार से पांच बच्चे सो रहे हैं, ताकि ठंड न लगे। पत्रकार को कुछ ऐसे बच्चे भी मिले, जो रात में अपने खुद के कपड़े जलाकर ठंड से बचने का प्रयास कर रहे हैं और कुछ बच्चे ऐसे थे जो महिलाओं की सूखती साड़ियां रस्सी पर से चुराकर लाते हैं और उसी साड़ी को वह रात को अपने बदन पर चारों ओर लपेट कर सो जाते हैं। बच्चों ने बताया कि जिस दिन भी ज्यादा ठंड लगती है उस दिन वे अपने कपड़े जलाकार आग का प्रबंध करते हैं। वह इसी प्रकार अपनी पूरी रात गुजारते हैं।

इसके साथ ही बच्चों ने बताया कि ठंडी और नोटबंदी के चलते हमें कबाड़ा भी नहीं मिल रहा है और न ही हमें कोई भीख दे रहा है। हमारे माता पिता भी हमें जबरन पैसा कमाने के लिए कहते हैं। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम लड़कियां कबाड़ा बीनने का काम करती हैं। पर जब से ठंड पड़ने लगी है तब से हमारा काम मंदा हो गया है और बोतल नहीं मिलती हैं तो हमारे माता मिता गलत काम करने के लिए हमसे बोलते हैं। क्योंकि इसी तरह इस समय ज्यादा पैसे कमाए जा सकते हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार!

सड़क व कामकाजी बच्चो की ओर से आप सभी को नए साल की बहुत बहुत बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों का अखबार बालकनामा एक नए अंक के साथ सच्ची घटनाओं व खबरों को लेकर प्रकाशित हुआ है। जैसे हम हर साल काम करते हैं, वैसे ही इस नए वर्ष में भी हम उतनी ही मेहनत और लगन से सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए काम करेंगे और अपने अखबार के माध्यम से उनकी परेशानी व समस्याओं को उजागर करेंगे।

साथियों, बालकनामा के पत्रकारों ने इस ठंडी के चलते स्टेशनों, फुटपाथों, झुग्गी, झोपड़ियों का दौरा करके बच्चों की परेशानी को जाना व समझा। बच्चों को होनी वाली परेशानियों के बारे में जाना और कैसे लड़कियों के लिए घर हो या बाहर असुरक्षित महसूस हो रहा है, इसकी सच्ची तस्वीरें आपके समक्ष लेकर आए हैं। इस प्रकार हम अपने अखबार के माध्यम से छोटी, बड़ी खबरों के साथ आपके बीच उपस्थित हुए हैं।

आशा करते है कि इस बार का अंक आपको पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर अवश्य भेजने का कष्ट करें।

संपादकीय टीम

कूड़ा छांटकर अपने माता-पिता का सहारा बने दोनों भाई-बहन

बातूनी रिपोर्टर विकास, रिपोर्टर चेतन

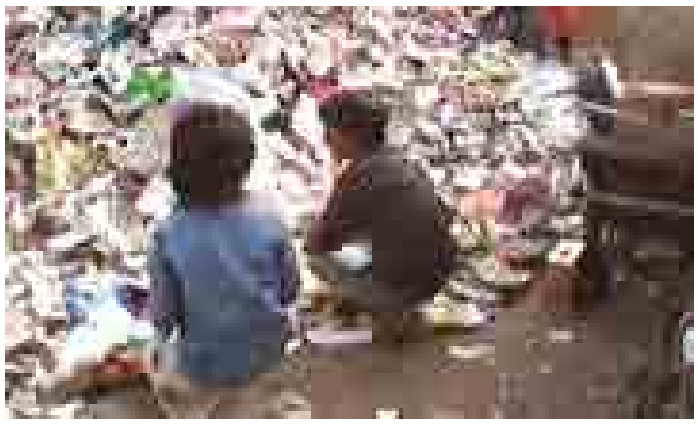

शहीद कैम्प में रहने वाले दो बहन भाई जो बड़ी ही कठिनाईयों के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे है। विकास 10 साल का है और इसकी बहन चांदनी 9 साल की है। विकास पांचवी कक्षा में पढ़ता है और चांदनी भी दूसरी कक्षा में पढ़ाई करती है। दोनों अपने मम्मी पापा के साथ रहते हैं। विकास के पापा सुहब पांच बजे दूसरे के घरों से कूड़ा उठाकर ले जाते हैं और विकास तथा उसकी मम्मी दूसरे के घर से लाए गए कूड़े को छांटते हैं। विकास सुबह सात बजे काम पर लगता है और रात को 9 से 10 बजे तक काम करता है। और चांदनी की जब स्कूल से छुट्टी होती है। तब वह भी काम पर लग जाती है। लेकिन जब इन दोनों की स्कूल की छुट्टी रहती है तो दोनों सारा दिन कूड़े की छटाई करते हैं। और कूड़ा भी इतना गंदा रहता है कि कोई दूसरा व्यक्ति वहां पर बैठ ही नहीं सकता।

विकास अपने पापा के साथ कभी कभी दूसरे के घर कूड़ा उठाने के लिए जाता है और जो भी बचा हुआ खाना होता है वह उठाकर लाता है। उसी खाने में से कुछ रोटी सब्जी अच्छा मिल जाता है तो वही खाना परिवार के साथ बैठ खाता है। कूड़े में जो सड़ा हुआ सामान होता है उसे गोदाम पर लेकर जाते हैं। पर यह गोदाम बीमारी का घर है क्योंकि इस गोदाम में से बहुत गंदी बदबू आती है।

विकास और चांदनी भी इसी गोदाम पर अपनी मम्मी के साथ रहते हैं। मम्मी घर में रहने के बजाए गोदाम में ही विकास और चांदनी के साथ रहती है और इसी गोदाम में रहकर वह कबाड़ा छांटने का काम करती हैं।

माता-पिता के काम न करने कारण कूड़ेदान से खाना निकालकर अपना पेट पालती नन्हीं मासूम बच्ची

बातूनी रिपोर्टर कल्पना, रिपोर्टर चेतन

कल्पना ने बताया कि भईया जब मैं रोज सुबह स्कूल के लिए निकलती हूं तो रास्ते में एक लड़की मिलती है जो स्कूल नहीं जाती है। लेकिन वह लड़की कबाड़ा बीनती है और जब उसे भूख लगती है तो मेन रोड के समाने एक कूड़ेदान है। वह कूड़ेदान में खाना ढूंढती है और कूडेद्रान में से उसे जो भी कुछ खाने को मिलता है, उसे निकालकर खा लेती है। यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है। एक रोज मैं उसके पास गई उससे बात की तो उसने मुझे बताया कि उसके माता पिता कुछ काम नहीं करते और वह स्कूल पढ़ने भी नहीं जाती। जब उसे भूख लगती है तो वह रोज इसी तरह कूड़ेदान से निकालकर खाना खा लेती है। वह किसी से मांगती नहीं है कि मुझे भूख लगी है, खाना दे दो। उसने बताया कि लोग मुझे डांटते हैं और मारते पीटते भी हैं कि तुम कूड़ेदान में से खाना निकालकर क्यों खाती हो। मैं अपनी परेशानी इन लोगों को रो रो कर बताती हूं कि मेरे माता पिता कुछ काम नहीं करते हैं, इसलिए मैं यहां से खाना निकालकर खाती हूं।

क्या मां ऐसी भी होती है?

बातूनी रिपोर्टर कविता, रिपोर्टर ज्योति

यह खबर दो मासूम भाईबहन की है। यह दोनों मूलचंद पुल के नीचे रहते हैं। इन दोनों के माता पिता कुछ काम नहीं करते हैं। सिर्फ घर में ही बैठे रहते हैं। पिता को टी.बी. की बीमारी है। वह हमेशा घर पर ही रहते है। माता ऐसी है खाना मिले या न मिले शराब मिलनी चाहिए। इसलिए मजबूर होकर इन दोनों बहन.भाई को भीख मांगने का काम करना पड़ता है। अगर भीख मांगने से मना करते हैं तो इनकी मां बहुत मारती है। रानी 4 साल की है और राहुल 6 साल का है। पिता को टी.बी. की बीमारी होने की वजह से इनकी मां बोलती है कि अपने पिता का इलाज कराने के लिए पैसे मांगकर लाओ तभी तो तुम्हारे पिता का इलाज हो पाएगा लेकिन जो पैसे भीख मांगकर लाते हैं उन्हीं पैसे से वह शराब पी लेती हैं और मेरे पिता को टी.बी. की वजह से दिन पर दिन बुरा हाल होता जा रहा है। ऐसे हालात को देखते हुए मेरे पिता बोलते हैं कि तुम लोग मेरे लिए भीख मांगकर मत लाओ मैं ऐसे ही मर जाऊंगा। पर जब हम दोनों बहन भाई भीख मांगने नहीं जाते हैं तो हमारी मां हमारे पिता को मारती हैं। जब कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर दीदी पढ़ाने के लिए आती हैं और मुझे बुलाकर ले जाती हैं तो मेरी मां हम दोनों बहन भाई से बोलती हैं कि तुम भीख मांगकर नहीं लाओगे तो मैं शराब कहां से लाऊंगी। जब हम दोनों

बहन भाई बीमार पड़ते हैं तो मेरी मां इलाज तक नहीं करवाती हैं। हम ऐसे ही बुखार में तड़पते रहते हैं। हमारी मां कभी हमारी दवा नहीं करवाती हैं।

ठंड ने किया स्ट्रीट चिल्ड्रन के जीवन को बदहाल

पृष्ठ 1 का शेष

कुछ लड़कियां अपने माता पिता के कहने पर यह कदम उठा रही हैं।

एक बालिका ने बताया कि हमारे माता पिता हमसे बोतले हैं कि बोतल बीनकर लाओ नहीं तो खाना भी नहीं मिलेगा। अब इस ठंडी में कबाड़ा ज्यादा मिल नहीं रहा है तो लड़कियों को मजबूरी में आकर किन्नर बनकर रेलगाड़ी में भीख मांगने का काम करना पड़ रहा है। क्योंकि अभी हमारा बोतल बीनने का काम नहीं चल रहा है। इसलिए अब हम लड़कियां किन्नर बनकर रेलगाड़ियों में भीख मांगने जाती हैं। सड़क पर रहने वाले बच्चों ने बताया हमारा कोई घर नहीं है और हम सड़क पर तिरपाल डालकर रहते हैं। यह अपना पालन पोषण करने के लिए लालबती पर पूरे दिन भीख मांगते हैं।

बच्चों ने पत्रकार से बोला कि जब से पांच सौ, एक हजार का नोट बंद हुआ है, तब से हमें बहुत कम पैसे मिलने लगे हैं। ऊपर से दिल्ली की बढ़ती ठंड में भीख नहीं मिल रही है। लोग अपनी गाड़ियों के दरवाजे नही खोलते हैं। हम लड़कियों को गाड़ी के पास खड़े होकर भीख मांगनी पड़ती है और आवाज़ लगानी पड़ती है। फिर भी दरवाजा नहीं खोलते। पहले हम एक सप्ताह में 500 रूपए तक कमा लेते थे, लेकिन अब सिर्फ 50 रुपए ही मिल पाते हैं। इतने कम पैसों में हमारे घर का खर्चा भी नहीं चल पा रहा है। इसलिए लड़कियां लड़कों के साथ अश्लील काम करती हैं और बदले में वह लड़के कुछ पैसे दे देते हैं। फिर वही पैसे से हम नशा खरीद कर ठंड से बचाव भी करते हैं तथा घर का खर्चा भी चलाते हैं। हमारे माता पिता हमारी बात नहीं सुनते, उनको तो सिर्फ पैसों से मतलब है। कैसे भी करके पैसे लाकर दो वह उसी में खुश रहते हैं।

ü बच्चों ने बताया कि जब हम रेलगाड़ी में किन्नर बनकर भीख मांगने जाते हैं तो इस दौरान हमें बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लोग हम से अश्लीलता से बात करते हैं कि 100 के बदले 1000 दे रहा हूं, चलेगी मेरे साथ एक घंटे के लिए।

ü लोग अश्लील बातें बोलते हैं और पैसे दिखाकर अपनी ओर आने का इशारा करते हैं।

ü स्टेशन पर रहने वाली लड़कियां ठंड से बचने के लिए नशीले पदार्थ कर सेवन कर रही हैं।

ü 16 साल की बालिका ने बताया कि हमारे पास गर्म कपड़े नहीं हैं, जिससे हम ठंड से बचाव कर सकें। इसलिए हम लड़कियां नशे का सेवन करती हैं।

ü बच्चे ठंड से बचने के लिए अपने कपडे.को भी जला देते हैं।

ü बच्चे लकड़ी बीनने के लिए दूर दूर जाते हैं, जब सूखी लकड़ी नहीं मिलती है तब वह अपनी पढ़ाई की किताबें भी जलाकर ठंड से बचाव करते हैं।

ü 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि ठंड से बचने के लिए हम लड़कियां दूसरे के घरों में झाड़ू पोछा का काम करने लगीं हैं।

ü स्टेशन पर रहने वाले कुछ बच्चे कूड़े कबाड़े का काम छोड़कर अब कंबल बेचने का काम कर रहे हैं।

ü ठंड से बचने के लिए बच्चे अश्लील काम कर रहे हैं।

ü लड़कियां अपने पास कुत्ते को सुलाकर ठंड से बचाव कर रही हैं।

राजधानी दिल्ली में कितनी असुरक्षित हैं लड़कियां

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली में आज भी कई इलाके ऐसे हैं जहां किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है और तो और उन इलाकों में शौचालय भी नहीं बने हुए हैं। वाल्मीकि कैंप में सिर्फ एक ही शौचालय बना हुआ। लोगों की इतनी संख्या होने की बावजूद लोग खुले में ही शौच करते हैं। ऐसी ही एक कॉलोनी की हम बात कर रहे हैं, जो वेस्ट दिल्ली वाल्मीकि कैम्प के शकूर पुर के नजदीक है।

इस कॉलोनी में छोटे बच्चे और लड़कियों को बहुत परेशानी होती है। क्योंकि वाल्मीकि कैम्प के नजदीक रेलवे लाइन है। इसलिए सभी लोग रेलवे लाइन के पास खुले में शौच करने के लिए जाते हैं। वहां पर एक ही शौचालय है, जिसमें सुबह 5 बजे से लेकर 11 बजे तक भीड़ लगी रहती है और वाल्मीकि कैम्प में कुछ बच्चे हैं, जो सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं। यह बच्चे अपने स्कूल में अकसर समय पर नहीं पहुंच पाते हैं। इसलिए स्कूल के अध्यापक उन्हें बहुत डांट खानी पड़ती है। क्योंकि वाल्मीकि कैंप में रहने वाले सभी बच्चे

शौच करने के लिए रेलवे लाइन पर जाते हैं। पर जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करने जाती हैं तो खासतौर पर उन्हें बहुत समस्या होती है, क्योंकि जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करती हैं तो बड़े बड़े लड़के उन्हें छुप छुपकर देखते हैं। वो लड़के शराब पीकर रेलवे लाइन के पास आ जाते हैं और गाली देते हैं।

इस रोज रोज की समस्या से लड़कियां और छोटे बच्चे बहुत परेशान हैं। इस समस्या के साथ वहां पर एक और दुर्घटना हो रही है क्योंकि रेलवे लाइन के पास एक जगह जिसे लोग खंडहर के नाम से जानते हैं वह खंडहर वाली जगह बहुत दिनों से वीरान पड़ी हुई है। वो जगह एकदम सुनसान रहती है। अगर कोई बच्चा इस तरफ जाता है तो उनका अपहरण कर लिया जाता है। वहां से बच्चे गायब कर दिए जाते हैं। इसलिए बच्चे यहां हमेशा डर कर रहते हैं कि कहीं हमें बाहर खुले में शौच करते समय अपहरण न कर लिया जाए। शौच न होने की वजह से बच्चों और लड़कियों को अलग अलग समस्याओं का सामना कर पड़ रहा है। बच्चे चाहते हैं कि उनके लिए वाल्मीकि कैंप में जल्द से जल्द शौचालय बनवाएं जाएं ताकि यह बच्चे शोषण का शिकार न हों और वैसे भी खुले में शौच करने से बीमारियां पैदा होती हैं और वातावरण भी गंदा होता है। स्वच्छ भारत अभियान के चलते हमारी इस समस्या का समाधान हों और लड़कियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनकी मदद की जाए, जिससे समाज में रहने वाली लड़कियां सुरक्षित रह सकें।

अकेले बच्चे के लिए सुरक्षित घर है शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर गुड़िया, रिपोर्टर ज्योति

15 वर्षीय गुड़िया जो अपने परिवार के साथ मथुरा में रहती थी। लेकिन उसके माता पिता बहुत बीमार रहते थे। उस वक्त गुड़िया सिर्फ 12 साल की थी। एक दिन उसके माता पिता की ज्यादा तबियत खराब हो गई और वह मथुरा स्टेशन से गुड़िया के साथ डॉक्टर के पास दवाई लेने के लिए जा रहे थे कि गुड़िया के माता पिता की अचानक एक ट्रेन हादसे में मृत्यु हो गई। यह हादसा देखकर गुड़िया जोर जोर से स्टेशन पर रोने लगी, क्योंकि उसके दोनों माता पिता चल बसे थे और वह बिल्कुल बेसहारा हो गई थी। गुड़िया को समझ में नहीं आ रहा था कि वह अकेले अब क्या करे। वह दूर खडी बस रोए जा रही थी। उस समय किसी ने भी उसकी मदद नहीं की, लेकिन गुड़िया के आसपास रहने वाली एक मुंह बोली चाची ने गुड़िया को देखा और उसे चुपचाप अपने साथ ले गई। गुड़िया की जो मुंह बोली चाची थी वह बहुत बुर्जुग थी। लेकिन फिर भी उन्होंने गुड़िया को अपनी बेटी बनाकर एक साल तक अपने साथ रखा। पर कुछ दिनों बाद वह भी बीमार पड़ने लगी तो वह गुड़िया को छोड़कर कहीं और चली गई। गुड़िया फिर से अकेली हो गई। फिर उसने अपना पेट पालने के लिए दूसरे के घरों में काम करने लगी।

एक दिन वह ट्रेन में बैठकर दिल्ली आ गई। जब गुड़िया दिल्ली आई तो बहुत रो रही थी, क्योंकि दिल्ली उसके लिए एकदम अंजान थी। दिल्ली के रास्ते भी उसे नहीं पता थे। इसके बावजूद वह भटकते हुए एक बच्ची से टकरा गई जो हरजत

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा चुन रही थी। तभी उसने देखा कि वह लड़की रो रही है। गुड़िया ने गुड्डी को अपने बारे में सारी बातें बताई। फिर गुड्डी ने भी अपने बारे बताया कि मैं एक सेंटर में पढ़ाई करती हूं और रैन बसेरे में रहती हूं। मैं कबाड़ा चुनने का काम करती हूं। गुड्डी ने उससे पूछा कि तुम होम सेंटर जाना चाहती हो तो गुड़िया ने बताया कि मै वहां नहीं जाना चाहती। गुड्डी गुडिया को बालकनामा पत्रकार ज्योति के पास लेकर गई। पत्रकार ने गुड़िया को समझाया कि आप यहां पर रहोगे तो आप को कोई नहीं देखेगा और जब आप सेंटर होम में रहेंगे तो आप सुरक्षित रहेंगे। फिर दूसरे दिन पत्रकार ज्योति ने कार्यकर्ता सुरेंद्र जी को गुड़िया के बारे में बताया और उनकी मदद से गुड़िया को सेंटर होम भेज दिया।

इतनी कम उम्र में परिवार की पूरी जिम्मदारी निभा रहा है असलम

बातूनी रिपोर्टर असलम, रिपोर्टर चेतन

मैं असलम 12 साल का हूं और कमला नेहरू कैंप में रहता हूं। मैं पहले 6 कक्षा में पढ़ने जाता था। लेकिन अब मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया है। क्योंकि मेरे पापा शराब पीते थे और रोज घर में लड़ाई झगड़ा करते थे और मेरी माम्मी खुद अकेले ही पूरे घर का खर्चा चलाती थी। वह इतने पैसे नहीं कमा पाती थी कि वह घर का पालन पोषण ठीक से कर सकें, इसलिए मैं भी 3 बजे से लेकर रात को 10 बजे तक एक राशन की दुकान में काम करने लगा। मुझे सुबह स्कूल भी जाना होता था पर मैं इस काम के चलते स्कूल नहीं पहुंच पाता था। इसलिए मुझे अपने घर का खर्चा और मम्मी की मदद करने के लिए स्कूल छोड़ना पड़ा और काम करने लगा। पहले मै राशन की दुकान पर काम किया करता था लेकिन अब मैं कुर्सी बनाने का काम करने लगा हूं। इसके साथ साथ घर की भी देखभाल करता हूं। मैं एक जिम्मेदार बड़े व्यक्ति की तरह अपना जीवन गुजार रहा हूं।

गाड़ियों से चलने वाले लोगों की अश्लील हरकतों से कैसे बचे हम?

बातूनी रिपोर्टर शन्नो, रिपोर्टर ज्योति

लालबत्ती पर लड़कियां अपने पेट पालने के लिए फूल बेचने का काम करती है लेकिन वहां पर आने जाने वाले लोग इन लड़कियों से अश्लील ढंग से बात करते हैं। 15 वर्षीय परिवर्तित नाम कविता ने बताया कि मैं यहां पर रोज फूल बेचती हूं।

अभी दो दिन पहले एक अंकल ने मुझ से पूछा कि यह फूल कितने का है मैंने बताया अंकल जी 50 रुपए का है। अंकलजी ने मुझे बोला कि मुझे दो फूल चाहिए और फिर कुछ देर के बाद बोला कि यह पांच सौ रुपए लो और कुछ देर के लिए मेरे साथ चलो।

मैंने अंकलजी से पूछा कि कहां चलना है और पूछने पर पता चला वह अंकल मुझे गलत काम करने के लिए ले जा रहे थे। उस वक्त मुझे बहुत डर लग रहा था क्योंकि मेरे आस पास कोई मेरा साथी नहीं था। मैं अकेली थी। फिर भी मैंने हिम्मत की और अंकल को एक पट्टा उठाकर तेज से मारा। जिसके कारण उनकी कार का कांच टूट गया और अंकल को भी सिर में काफी तेज चोट लग गई।

तभी एक आंटी मुझसे बोली कि आप उसे क्यों मार रहे हो बेटा? मैंने बोला कि यह अंकल मुझे यौन संबंध बनाने के लिए बोल रहे हैं इसलिए मैंने मारा है। यह बात सुनते ही आंटी ने मेरी मदद करने के लिए पुलिस को फोन कर ही रही थी कि तब तक वह व्यक्ति अपनी कार में बैठकर भाग गया। उस दिन से मैं और भी ज्यादा डर गई हूं। क्योंकि इस तरह की घटनाएं दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही हैं। जब तक हम किसी से मदद मांगते हैं तब तक गाड़ी में सवार होकर वहां से गायब हो जाते हैं। ऐसे में हम अपनी सुरक्षा सड़कों पर कैसे करें। हम कामकाजी लड़कियों का लोग गलत फायदा उठाते हैं, लेकिन हमारी मदद करने वाला कोई नहीं है।

पत्रकार के सहयोग से रवि पंहुचा सेंटर होम

बातूनी रिपोर्टर ईशा, रिपोर्टर ज्योति

कालकाजी मन्दिर में बालकनामा के पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी परेशानी बताई। 15 वर्षीय ईशा ने बताया कि दीदी यहां परएक लड़का है जिसका नाम रवि है। उसने एक दुकान में एक महीने तक काम किया और जब तंख्वाह देने का वक्त आया तो दुकान के मालिक ने मारकर भागा दिया।

अब वह बच्चा पूरे दिन मंदिर के आस पास इधर उधर घूमता रहता है। उसके पास खाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। इसलिए वहां पर जो लंगर बंटता है वही खाकर रह जाता है। यह बात सुनते ही बालकनामा पत्रकार उस बच्चे से जाकर मिले और उसके मालिक से भी जाकर मुलाकात की। मालिक ने बताया कि इस लड़के ने मेरे पास दस दिन तक ही काम किया है और पूरे दशहरे इधर उधर

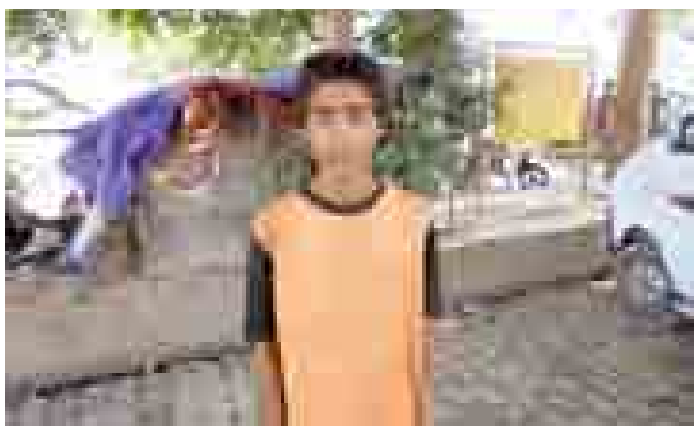

घूमता ही रहता था। इसलिए मैंने नौकरी से निकाल दिया है। पत्रकार ने मालिक को समझाते हुए कहा कि एक तो आप ने छोटे बच्चे से काम करवाया और ऊपर से आप झूठ बोल रहे हो कि मेरे पास सिर्फ दस दिन तक ही काम किया है। मालिक ने पत्रकार को बोला जो करना है कर लो मैं पैसे नहीं दूंगा।

पत्रकार ने तुरंत चाल्डलाईन 1098 को कॉल कर दिया और कुछ ही देर में चाल्डलाईन 1098 के कार्यकर्ता आए। उनके आते ही बच्चे ने बोला कि मुझे लड़ाई झगड़ा नहीं करना है। मुझे आप शेल्टर होम ही भेज दीजिए मैं वहीं पर रहूंगा। पत्रकार ने रवि से पूछा कि आप अपने घर क्यों नहीं जाना चाहते तो हो? रवि ने बताया कि अगर मैं इस हालत में घर गया तो मेरे परिवार वाले मारकर भाग देंगे। इसलिए मैं शेल्टर होम ही जाना चाहता हूं। जब मेरी स्थिति ठीक हो जाएगी तो मैं घर चला जाउंगा। चाल्डलाईन कार्यकर्ता के सहयोग से रवि को शेल्टर होम भेजा दिया गया। अभी रवि शेल्टर होम में सुरक्षित रह रहा है।

चेन बनाकर अपनी चाची का इलाज करा रही है नंदनी

बातूनी रिपोर्टर नंदनी, रिपोर्टर पूनम

यह खबर 15 वर्षीय नंदनी की है। नंदनी के परिवार में पांच भाई बहन और चाची है। एक भाई विकलांग है। जब नंदनी छह महीने की थी, तब उसकी मम्मी की मृत्यु हो गई। जब से नंदनी को उसके चाचा चाची ने पाला है और कुछ साल के बाद जब नंदनी 12 साल की हुई तो उसके चाचा की भी मृत्यु हो गई। उस दिन के बाद से ही पूरे घर की जिम्मेदारी नंदनी के कंधों पर ही आ गई। अब चाची की भी तबियत हमेशा खराब रहती है। इसलिए नंदनी को अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए काम करना पड़ता है। अभी नंदनी अपने भाई बहन से अलग अपनी चाची के साथ रहती है। चाची के तीन बच्चे हैं

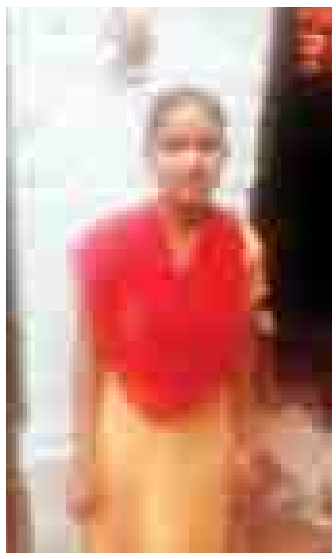

दो लड़की और एक लड़का। लड़के के पांव में फोड़ा है इसलिए वह काम करने नहीं जाता है। नंदनी को अपनी चाची की दवाई के लिए पैसे कमाकर लाने पड़ते हैं। इसलिए नंदनी चेन बनाने का काम करती है, जिसमें उसे 150 चेन के गुच्छे मिलते हैं। उस चेन की मरम्मत करने के बाद नंदनी को एक चेन बनाने पर नौ रुपए मिलते हैं और पूरे दिन काम करने पर 27 रुपए। तब भी घर का खर्चा पूरा नहीं हो पाता। क्योंकि आज के जमाने में इतनी मंहगाई है कि सौ रुपए से भी ज्यादा खर्चा हो जाता है तो 27 रुपए से क्या होता है? जैसे तैसे वह अपने परिवार का गुजारा चला रही है। नंदनी पढ़ाई करना चाहती है पर घर का स्थिति खराब होने के कारण वह स्कूल नहीं जा पा रही है।

एक कदम शिक्षा की ओर

बातूनी रिपोर्टर मोनी, रिपोर्टर सौरभ

12 वर्षीय मोनी नोएडा सेक्टर 52 में रहती है। पापा रिक्शा चलाने का काम करत हैं और मम्मी कोठियों में काम करती हैं। तब जाकर घर का गुजारा हो पाता है। मोनी के घर में दो छोटे बहन भाई भी हैं इसलिए मोनी घर पर रहकर अपने छोटे बहन भाई का ख्याल रखती है। मम्मी सुबह दस बजे ही काम पर चली जाती हैं और पापा पूरे दिन रिक्शा चलाते हैं तो मोनी अपने बहन भाई की पूरे दिन देखरेख करती है। लेकिन मोनी पढ़ाई करना चाहती है।

दूसरे बच्चों ने पत्रकार को बताया कि मोनी हमेशा अपने घर पर कुछ न कुछ पढ़ती रहती है। मोनी का सपना है कि मैं अध्यापक बनूं और जिन बच्चों के मम्मी पापा दूसरे के घरों में काम करने जाते हैं, उनके बच्चों को मैं पढ़ाउं। इसलिए मोनी पढ़ाई करना चाहती है।

जब से मोनी को पता चला है कि एक दीदी हम जैसे बच्चों को फ्री में पढ़ाने के लिए आती हैं तब से मोनी भी अपनी मम्मी पापा की इजाजत से रोज कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ाई करने जाती है। वह मैडम भी मोनी की पढ़ाई में रूची देखकर बहुत खुश हैं। अब मोनी के मम्मी पापा को भी लग रहा है कि मेरी बेटी पढ़ाई कर पाएगी।

राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग के सदस्य मिले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से

बातूनी रिपोर्टर नगमा, रिपोर्टर शम्भू

राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग की सदस्या रूपा कपूर जी स्टेशन पर रहने वाले बच्चों से मिलने आई कि किस कारण से बच्चे अपने घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं। साथ ही बच्चों से पूछा कि जहां पर आप रहते हो वहां पर क्या क्या परेशानियां आती हैं? 16 वर्षीय करन ने बताया कि हम बच्चों को माता पिता मारते हैं इसलिए अपने घर से भागकर चले आते है और स्टेशन पर आने के बाद में हम दूसरे बच्चों को देखकर नशा करना सीख जाते हैं और जब हम बच्चे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो पुलिस वाले भी मारते हैं।

15 साल की नगमा ने बताया कि दीदी हम में से कुछ बच्चे पुल के नीचे भी रहते हैं तो हम बच्चों को पुलिस वाले मारते हैं। 15 अगस्त या 26 जनवरी को वह हम बच्चों को मारकर भगाते हैं। वो रात को आते हैं और बोलते हैं यहां से अपना बोरी बिस्तार उठाओ और कहीं और ले जाओ। हम बच्चों जब उनसे बोलते हैं कि आप ऐसे क्यों करते हो? तो वह बोलते हैं कि ऊपर से आर्डर मिला है इसलिए भगा रहा हूं। इतनी परेशानियों का सामना करने के बाद भी हम बच्चे पढ़ाई करना चाहते हैं। इसलिए रोज सेंटर में पढ़ाई करने के लिए आते हैं। यह बात सुनते ही रूपा कपूर जी कहा कि आप सब बहुत होनहार हो। आप बच्चों की जितनी भी तारीफ की जाए उतनी कम है। उन्होंने यह भी बोला कि अगर आप बच्चों को अब कोई परेशान करता है तो आप मुझे फोन भी कर सकते हो।

इंद्र प्रस्थ पार्क बना अश्लीलता का अड्डा

बालकनामा ब्यूरो

सराय काले खां में इंद्र प्रस्थ पार्क है। वहां पर बच्चे खेलने एवं कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। इस पार्क में बड़े बड़े लोग लड़कियों के साथ अश्लील हरकते करते हैं। पूरे पार्क में वही लोग बैठे रहते हैं और छोटे छोटे पेड़ों के नीचे छिपकर अश्लील हरकते करते हैंक 14 वर्षीय रूपा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए पार्क में भी जाते हैं क्योंकि वहां पर खेलने के लिए झूले लगे हुए हैं। एक दिन कि बात है जब हम लड़कियां झूला झूल रही थी तो एक अंकल जिनकी उम्र लगभग 23 साल थी उस अंकल ने मुझसे बोला कि आप को एक विड़ियो दिखाऊं। हम सब ने बोला कि कौन सी विड़ियो है। उन्होंने बोला मेरे साथ उस पेड़ के नीचे आओगे तो मैं तीन सौ रुपए दूंगा फिर हम सब लड़कियां समझ गए कि यह अंकल हम लोगों के साथ गलत काम करना चाहते हैं। इसलिए हम लोग वहां से भाग गए। वहां पर लोग हमेशा लड़कियों से गलत व्यवहार किए जाते हैं। वह लोग सही लड़कियों को गलत नजर से देखते हैं। अगर इस पार्क में ऐसे ही हलात रहे तो हम जैसे कूड़ा कबाड़ा बीनने वाले बच्चों पर बहुत बुरा असर पड सकता है।

इस पार्क में पहले एक गार्ड भी रहता था। वह थोड़ा सही था तो उसका मर्डर हो गया। जब से कोई नया गार्ड नहीं आया है। पार्कों में इस तरह खुले आम अश्लील हरकते करना हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों का रहना दुभर कर रहा है क्योंकि जो कपल पेड़ के नीचे बैठे होते हैं उन्हे वह सभी लोग देखते हैं जो आस पास घूमते रहते हैं और फिर वह लोग हम बच्चों को परेशान करते हैं और छोटे छोटे बच्चे भी बड़ों से सीखते फिर वह भी आपस में उनके जैसी हरकते करते हैं। ऐसे पार्कों में बहुत पाबंदी होनी चाहिए। हम बच्चे यही चाहते हैं कि दिल्ली सरकार इस आई पी पार्क के ऊपर जल्द से जल्द संज्ञान ले और कार्यवाही करे। ताकि हम बच्चे भी सुरक्षित इस पार्क में खेलकूद सकें उसके आस पास बने स्कूलों में भी सुरक्षित पढ़ने जा सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

पीपावे रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड के सहयोग से नशे में लिप्त बच्चों को मिला नया जीवन

बातूनी रिपोर्टर अजीत, रिपोर्टर शम्भू

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन जीआरपी थाने के पास एक नवंबर, 2015 को एक जगह मिली, जहां पर स्टेशन पर रहने वाले बच्चे जो पूरे दिन कबाड़ा चुनकर अपनी गुजर बसर करते थे और पूरे दिन नशे में लिप्त रहते थे उनके जीवन में कैसे परिवर्तन लाया जा सके इस उदेश्य से काम शुरू किया गया। उसके बाद सनत जी ने पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लगातार 15 दिन आउटरिच करने के बाद कुछ बच्चे पढ़ने के लिए आने लगे। ये बच्चे नशा करने वाले बच्चे थे।

पत्रकार ने सनत जी से पूछा कि जब बच्चे नशे में थे तो आप उन्हें कैसे संभालते थे? सनत जी ने बताया कि मैं बच्चों के मन के ऊपर काम करता था। वह जो बोलते थे कि मेरा मन खेलने

का करता है तो मैं उन्हें बोलता था कि ठीक है आप खेलो। जब खेलते खेलते बच्चे थक जाते थे तो वह खुद बोलते थे कि सनत भइया अब मुझे पढ़ाई करने का मन है तो मैं उनसे पढ़ाई करवाता था। क्योंकि अगर आप स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को एक बार में ही बोलगे कि आप लोग सिर्फ पढ़ाई करो तो भाग जाएंगे। इसलिए हम उनके हिसाब से चलते हैं और इसके जरिए बच्चे पढ़ाई और खेल में शामिल होते थे तो नशा भी नहीं करते थे। सनत जी ने यह बताया जब मैं पहली बार इन बच्चों से मिला था तो इन बच्चों का बहुत बुरा हाल था। लेकिन जब से मेरे पास बच्चे पढ़ाई करने के लिए आने लगे हैं तब से 17 बच्चों ने पूरी तरह से नशा करना छोड़ दिया है और 19 बच्चों ने नशा करना बहुत कम कर दिया है।

8 बच्चों को जो 18 वर्ष के हो गए हैं उनको स्टेशन की दुनिया से दूर करने के लिए जीएमआर सेंटर से हाउस कीपिंग का कोर्स कराया गया है। ताकि वह अपने जीवन में आगे बढ़ सकें। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोगों में क्या बदलाब आया है यहां से जुड़कर? 15 साल के अजीत ने बताया कि पीपावे रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड और सनत भइया की मदद से आज हम बच्चों के जीवन में बहुत बदलाव आया है। हम सभी बच्चे पढ़ाई लिखाई करने लगे हैं। हम बच्चों ने कभी सोचा ही नहीं था कि नशे से दूर हो पाएंगे। हमारे जीवन में बदलाब आएगा, हम बच्चे बहुत खुश हैं। पीपावे के निर्देशक श्री अमिताभ जी हम बच्चों से मिलने आते रहते हैं। हम बच्चों की परेशानियों को सुनते हैं। अभी हाल ही में वह किक्रेट खेलने का पूरा सामान हम बच्चों के लिए लेकर आए। हम बच्चों ने उनसे बोला कि हमें किक्रेट खेलना बहुत पसंद है और उनकी मदद से अब हम बच्चे हर महीने अलग अलग जगह घूमने के लिए भी जाते हैं जैसे चिड़िया घर, लालकिला। हम बच्चों को बहुत नई नई जगह घूमकर बहुत अच्छा लग रहा है।

बच्चे चाहते हैं ट्रेन की पटरी के पास दीवार हो जाए

बातूनी रिपोर्टर निशा, रिपोर्टर शम्भू और चेतन

कमला नेहरू कैंम्प से लेकर जवाहर कैंम्प तक लगभग 3500 तक झुग्गियां हैं और ट्रेन की पटरियां इन झुग्गियों से होकर निकली हैं। 15 वर्षीय सपना ने बताया कि भइया यहां पर आए दिन एक्सीडेंट की घटनाएं घटती रहती हैं, क्योंकि बहुत सारे बच्चों के माता पिता अपने बच्चों को छोड़कर कोठी में काम करने जाते हैं। वह अपने बच्चों को छोड़कर काम करने नहीं जाएंगे तो घर का खर्चा कैसे चलेगा। इसलिए बच्चे पूरे दिन अकेले इधर से उधर खेलते रहते हैं। ज्यादातर बच्चे पटरियों के किनारे ही खेलते रहते हैं, क्योंकि कुछ बच्चों के बड़े भाई बहन पटरियों के किनारे बुरादा छांटने का काम करते हैं। अपने बड़े भाई बहन को देखते हुए छोटे बच्चे भी बुरादे को छांटने का काम करने लगते हैं, जिसकी वजह से बच्चों के नांक मुंह में बुरादे की धूल चली जाती है और छाती में दर्द, पेट में दर्द होता रहता है। बुरादा छांटते छांटते बच्चे पटरियों पर खेलने के लिए चले जाते हैं।

बच्चों ने बताया कि कभी कभी ट्रेन की सीटी तक नहीं बजती है। 16 साल की शिवा ने बताया कि दो महीने पहले की बात है कि मेरे पापा शौच करने के लिए रात को बाहर निकले थे। और ट्रेन की दुर्घटना के शिकार हो गए, जिसकी वजह से उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। दो तीन दिन तक अस्पताल में भर्ती रहे और चैथे दिन मेरे पापा की मृत्यु हो गई। ऐसी घटना मेरे साथ ही नहीं, हर बच्चे के साथ होती रहती है और मेरी तरह उन बच्चों के सिर से भी माता पिता का साया हट गया है। हम बच्चे यही चाहते हैं कि जब ट्रेन यहां पर आती है तो काफी दूर से ही सीटी बजने लगे ताकि हम सावधान हो जाएं और सुरक्षित रहें। हम बच्चे कुछ बोल भी नहीं सकते क्योंकि हम बच्चे सरकारी जमीन पर रहते हैं और यह सारी जमीन रेलवे की है। हमें डर लगा रहता है कि कहीं हम बच्चों को यहां से भगा न दिया जाए, इसलिए कुछ नहीं बोलते हैं।

कैसे प्यार मोहब्बत के चंगुल से बचाया नाबालिग नूरी को

बातूनी रिपोर्टर सपना, रिपोर्टर शम्भू और चेतन

वेस्ट दिल्ली नेहरू कैंप में छोटी छोटी लड़कियों की जनसंख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। जो लड़कियां बड़ी हो गई हैं, वह प्यार मोहब्बत के चक्कर में रहती है, उनको देखकर छोटी लड़कियों पर भी इसका गलत असर पड़ रहा है। 16 वर्षीय सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इन लड़कियों के माता पिता कोठियों में काम करने जाते हैं। यह छोटी लड़कियां जब पार्क में खेलने जाती हैं तो बड़ी लड़कियों को जैसा करते देखती हैं, वह भी ऐसे ही करती हैं। यह छोटी लड़कियां किसी भी लड़के से प्यार करने लगती हैं। अगर किसी लड़के ने इन लड़कियों को प्यार करने से मना कर दिया तो यह लड़कियां अपना हाथ काट लेती हैं। इनके मम्मी पापा भी इन्हें बहुत मारते हैं फिर भी इन लड़कियों पर कोई असर नहीं हो रहा था।

तभी नेहरू कैम्प में रहने वाली लड़कियों ने यह निर्णय लिया कि जो लड़कियां प्यार मोहब्बत के चक्कर में फंसी हुई हैं। उनको हम सुधारने की कोशिश करेंगे। अभी हम लड़कियों ने एक लड़की का जीवन सुधारा है जिसका परिवर्तित नाम नूरी है। वह भी पहले लड़कों से प्यार करती थी। पर हम लड़कियों ने समझाया कि अभी आपकी उम्र पढाई लिखाई करने की है प्यार मोहब्बत करने की नहीं। प्यार मोहब्बत के चलते आपका जीवन नष्ट हो जाएगा। तब जाकर नूरी हमारी बात मानी। अब नूरी सिर्फ पढ़ाई लिखाई करती है। साथ में अपने भाई बहन का भी ख्याल रखती है। अभी तो सिर्फ एक लड़की का जीवन बदला है। हम चाहते हैं कि जिस जगह पर इस प्रकार का माहौल है वहां पर लोग इनको समझाएं कि अभी उनकी उम्र पढ़ाई लिखाई करने की है। अभी इन बातों पर ध्यान नहीं देना है। हम लड़कियों को इसी तरह समझाते हैं जैसे नूरी को समझाया है। हमारी कोशिश है कि हम छोटी लड़कियों पर ध्यान दे और इन्हें इन सभी बातों से दूर रख पाएं।

चचेरे भाई की हवस का शिकार बनी आरती

बालकनामा ब्यूरो

आज कल लड़कियां घर में भी सुरक्षित नहीं हैं। आरती (परिवर्तित नाम) अपनी मौसी के साथ रहती है और आरती की मां की दिमागी हालत ठीक नहीं है और पापा भी हमेशा नशे में लिप्त रहते हैं। उसके माता पिता को परवाह ही नहीं है कि मेरी बेटी कैसी है, कहां है। मौसी के घर में आरती के साथ उसकी एक छोटी बहन और मौसी का एक बड़ा लड़का भी रहता है। जो आरती के साथ रोज यौन शौषण करता था। जब भी आरती इस लड़के को यौन शौषण करने से मना करती थी, तब यह लड़का आरती को बहुत बुरी तरह से मारता था। इसलिए आरती ने अपनी परेशानी नानी से बताई, कि जब मैं अकेले घर में सो जाती हूं तो मौसी का लड़का रोज रात को मेरे पास आकर मेरे साथ यौन शौषण करता है। यह सुनते ही उसकी नानी ने आरती को सलाह दी कि तुम अपने साथ एक डंडा लेकर सोना और जैसे ही वह गलत करने की कोशिश करे तो उसे डंडे से मारना। आरती ने ऐसा ही किया। जब वह रात को सोने के लिए आया तो आरती ने उसके सिर पर डंडा मारा, जिससे उसके सिर में काफी चोट आ गई। अगली सुबह उस लड़के ने अपनी मम्मी से बोला कि मम्मी आरती को मैंने कुछ भी नहीं किया फिर भी उसने मेरे सिर में डंडा दे मारा। यह बात सुनते ही आरती की मौसी ने उसे घर से निकाल दिया।

घर से निकलने के बाद वह पूरे दिन इधर से उपर भटकती रही और जब रात होने लगी तो पड़ोस में एक लड़का रहता था उसके पास आरती गई और बोली कि मुझे रात को सोने के लिए जगह चाहिए तो उसने उसे सोने के लिए जगह तो दे दी, लेकिन बदले में उसने भी आरती के साथ यौन शौषण किया। फिर जब आरती अपनी मौसी के घर मे छांककर देखा तो मौसी का लड़का आरती की बहन के साथ अश्लील हरकत कर रहा था। यह देख आरती बहुत घबरा गई। उसने सोचा कि मेरे जाने के बाद उस लड़के ने मेरी बहन के साथ अश्लील हरकतें करनी शुरू कर दी। लेकिन जब आरती बालकनामा के पत्रकार के सम्पर्क में आई तो आरती ने पत्रकार को इस पूरी घटना के बारे में विस्तार से बताया। यह बात सुनते ही पत्रकार ने चाल्डलाइन 1098 को कॉल कर दिया चाल्डलाइन 1098 के कार्यकर्ता ने जांच की और आरती को बाल कल्याण समिति में पेश किया गया। फिर मेडिकल के लिए भेजा गया। पर डॉक्टर ने मेडिकल करने से मना कर दिया। क्योंकि आरती के माता पिता के साइन चाहिए थे, लेकिन मम्मी का दिमागी हलात ठीक नहीं है इसलिए वह साइन नहीं कर पाई और पापा तो हमेशा नशे में ही रहते हैं। उसके बाद चाल्डलाइन कार्यकर्ता ने आरती को बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया तो समिति द्वारा आरती को शेल्टर होम भेज दिया गया।

यह घटित घटना नोएडा की है। पत्रकार को वहां की रहने वालीलड़कियों ने बताया कि हम जैसी लड़कियों के साथ ऐसी घटनाएं रोज होती रहती हैं। पहले तो हम लड़कियां बाहर सुरक्षित नही थी पर अब तो हम घर के अंदर भी सुरक्षित नहीं हैं। घर में जिसे हम भाई समझते है वही गलत करते हैं।

रामअवतार के हौसले को सलाम

बातूनी रिपोर्टर राम अवतार रिपोर्टर शम्भू

यह कहानी राम अवतार की है। राम अवतार जब आठ साल का था तब अपने माता पिता से लड़ाई करके पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भाग कर आ गया था। स्टेशन पर आने के बाद वह कुछ दिन तक भूखे रहे और अपना पेट पालने के लिए ट्रेन में बोतल बीनने का काम करने लगे। जिससे राम अवतार को कुछ पैसे मिल जाते थे तब जाकर खाना खा पाता था। स्टेशन पर रहने के कारण बड़े बच्चों ने राम अवतार को नशा करना सिखा दिया जैसे गांजा, चरस, शिगरेट आदि। नशा करने के कारण उसका हाल बहुत बुरा हो गया। रामअवतार की ऐसी हालत देखकर उसे नशा मुक्ति सेन्टर ले जाया गया पर वह उस सेंटर से भागकर स्टेशन पर आ जाता था। क्योंकि राम अवतार एक बन्द घर में नहीं रहना चाहता था। वह तो खुले में रहना चाहता था। नशा करना चाहता था। पूरे दिन नशे में लिप्त रहता था। खाना मिले या न बस नशा मिलना चाहिए।

लेकिन जब पीपावे रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड के सहयोग से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बच्चों के लिए कॉन्टेक्ट प्वाइंट चलाया गया और सनत जी आउटरीच के दौरान राम अवतार से मिले और अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने के लिए बुलाने लगे। फिर भी राम अवतार नहीं आते थे।

पर कुछ दिनों बाद सनत जी की मेहनत रंग लाई और राम अवतार कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढाई करने के लिए आने लगे। फिर धीरे धीरे सनत जी ने राम अवतार को समझया कि नशा करने बच्चे अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। आप नशा करना छोड़ दो। फिर आप आगे बढ़ सकते हो क्योंकि नशे कि लत में आप कुछ नहीं कर सकते हो।

कुछ दिनों के बाद राम अवतार ने नशा करना धीरे धीरे कम कर दिया। अभी बिल्कुल नशा नहीं करता हैं। अब राम अवतार 18 साल का हो गया है। उसे जीएमआर से डेढ महीने का हाउस कीपिंग का कोर्स कराया गया है। अब राम अवतार को हाउस कीपिंग के कोर्स का प्रमाण पत्र भी मिल गया है और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर ही साफ सफाई करने की नौकरी भी उसे मिल गई है। अब वह प्रतिमाह 9000 रुपए कमा रहा है।

राम अवतार अब अपने जीवन में बहुत खुश है। उसने पत्रकार को बताया कि भइया मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं भी कुछ कर सकता हूं, लेकिन आज मैं बहुत खुश हूं। मेरी इस कामयाबी में सबसे बड़ा हांथ सनत भइया का है। अगर वह मुझे नहीं समझाते तो आज भी मैं स्टेशन पर नशा करता रहता। मैं यही चाहता हूं कि जिस तरह मैं अपने जीवन में आगे बढ़ा हूं इसी तरह सभी बच्चे आगे बढ़े।

डंडे के बल पर बच्चों से बात करते हैं कुछ पुलिस अधिकारी

बालकनामा ब्यूरो

रेलवे स्टेशन पर बच्चे अपने गुजारे के लिए काम करते हैं, जिससे उन बच्चों को दो वक्त की रोटी मिल सके। कुछ बच्चे रेलगाड़ी में काम करने जाते है लेकिन काम करने वाले बच्चों ने बताया कि जब हम बच्चे रेलगाड़ी में बोतल उठाने के लिए जाते हैं या झाड़ू लगाने का काम करने जाते हैं तो एक स्टार वाले पुलिस वाले भइया हम बच्चों को बुरी तरीके से मारते हैं। वह हम बच्चों पर झूठा आरोप लगाते हैं कि तुम लोग ही पब्लिक का सामान चोरी करते हो। लेकिन हम बच्चे चोरी नही करते हैं, सिर्फ अपने काम से ही मतलब रखते हैं। जैसे कुछ बोतल मिले उसे उठाकर रेलगाड़ी में से बाहर निकल लाते हैं।

ये एक स्टार वाले पुलिस भइया बोलते हैं कि अगर तुम लोग मुझे कुछ पैसे दे दो तो कोई हांथ तक नहीं लगाएगा। पर हम बच्चे ऐसा नहीं करते। अगर हम अपने कमाए हुए पैसे पुलिस को देंगे तो हम अपना गुजारा कहां से करेंगे। पैसे नहीं देने की वजह से हम बच्चों को बहुत बुरी तरह से मारते हैं। अभी हम बच्चे मार खाकर रह लेते हैं पर ठंड के मौसम में हम बच्चों हर रोज पुलिस के डंडे से मार खाना बहुत भारी पड़ रहा है। क्योंकि गर्मी के मौसम में डंडों से इतना दर्द नहीं होता है, जितना ठंड में होता है। ठंड के मौसम में थोड़ी चोट से भी बहुत तेज दर्द होता है। हम चाहते हैं कि पुलिस हमें डंडों से न मारे। हमें भी दर्द होता है।

अपने नन्हें हाथों से 56 बच्चे बनाते हैं पत्थरों का ताजमहल

बातूनी रिपोर्टर प्रियंका, रिपोर्टर पूनम

आगरा शहर के इलाके में 56 बच्चें ऐसे हैं जो अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए पत्थर का ताजमहल बनाने का काम करते हैं। जब इन बच्चों से पत्रकार ने बात की तो 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारा एक मालिक है और वह हम बच्चों से ठेके पर काम कराता है। हम बच्चों को वह एक दिन के 50 रुपए देता है। बच्चों ने यह भी बताया कि जब वे पत्थर से डिजाइन बनाते हैं तो बहुत धूल मिट्टी निकलती है और नांक में जो धूल जाती है, उससे छाती में बहुत दर्द होता है। सांस लेने में बहुत परेशानी होती है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोग पत्थर का ताजमहल बनाने के बाद इसका क्या करते हो? 16 वर्षीय बालक ने बताया कि डिजाइन बनाने के बाद शीशे के डब्बे में पैक करते हैं फिर बाजार में सेल करने के लिए जाते हैं और लोग एक पीस के 15 रुपए देते हैं और कभी कभी हमारा माल नहीं बिकता है तो हम बच्चों को 10 रुपए का एक पीस बेचना पड़ता है। ताजमहल बेचकर सारे पैसे मालिक को देना पड़ता है।

अगर मालिक अच्छे मूड में होता है तो ज्यादा पैसे दे देता है, नहीं तो 50 रूपया भी मिलना मुश्किल होता है। हम बच्चों को इसके अलावा और कुछ काम करना नहीं आता। बड़े ही दुख की बात है कि मेरे माता पिता भी शुरू से यही काम करते आ रहे हैं। इसलिए हम बच्चों से यही काम कराया जाता है और हम बच्चे यह काम घर में ही सीख जाते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को स्कूल जाने का मन नहीं करता? 14 साल के बालक ने बताया कि जब मैं बाजार में सामान बेच रहा होता हूं, तब कोई बच्चा स्कूल की ड्रेस में मेरे पास आता है तो मेरा भी दिल अंदर से बोलता है कि काश मैं भी स्कूल जाता तो अच्छे अच्छे कपड़े पहनने को मिलते। दूसरे बच्चों की तरह मुझे भी पढ़ना लिखना आता है, लेकिन हम बच्चों के नसीब में पढ़ाई लिखाई नहीं है, क्योंकि हमारे पिता शराब पीते हैं। उनको खाना मिले या नहीं मिले शराब तो जरूर मिलनी चाहिए, नहीं तो घर में मारपीट शुरू कर देते हैं।

बच्चों का खेलने का मैदान बना कूड़ाघर

बातूनी रिपोर्टर प्रेमचंद, रपोर्टर शम्भू

सुभाष कैम्प में रहने वाले बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि हमारी बस्ती में दिन पर दिन गंदगी बढ़ती जा रही है। हमारी बस्ती में एक बहुत बड़ा मैदान है, जिसमें बारिश होने पर ढेर सारा पानी भर जाता था। लेकिन अभी यह स्थिति है कि उस मैदान को लोगों ने कूड़ाघर समझ लिया है। क्योंकि वहां रहने वाले लोग अब उस मैदान को इतनी बुरी तरह भर देते हैं जैसे मानो पूरी गंदगी का ठिकाना उस मैदान में ही है। उस मैदान के आसपास छोटे छोटे बच्चे खेलते रहते हैं। सबसे ज्यादा परेशानी यह है कि उस मैदान में पहले सिर्फ बारिस का पानी जमा होता था, लेकिन लोगों द्वारा उस मैदान का गलत उपयोग किया जा रहा है। उस मैदान में बारिश के बिना भी बहुत पानी भरा रहता है।

16 वर्षीय प्रेमचंद ने बताया कि लोग अपने घरों का गंदा पानी जैसे नहाने, कपड़े धोने और बर्तन धोने का गंदा पानी उसी मैदान में फेंकने लगे हैं। जब से लोग ऐसा करने लगे हैं तब से यहां पर गंदगी फैलने लगी है। 14 वर्षीय खुशबू ने बताया कि जो लोग उस पार रहते हैं वह लोग इसी मैदान में अपने बच्चों को शौच कराते हैं और घर में जो मुर्गा मछली काटते हैं वह भी इसी मैदान में डालते हैं। तथा जिन लोगों के पालतू सुअर मर जाते हैं उसको भी वह इस मैदान में फेंक देते हैं। इसलिए हम बच्चे अब अपने घर के पास नहीं खेल पाते हैं, क्योंकि इतनी बुरी बदबू आती है कि उल्टी आने लगती है। अभी कुछ दिनों पहले हम बच्चों के माता पिता के साथ लड़ाई भी हुई थी। वह हमारे माता पिता को मारने के लिए तैयार हो गए। वह लोग बोल रहे थे कि हम लोग इस जगह पर रहते हैं तो कूडा.कचरा कहां पर डालने जाएंगे। हम बच्चों को यहां पर रहने में बहुत परेशानी होती है।

हम सभी बच्चे चाहते हैं कि इस पर जल्द से जल्द कार्यवाही की जाए। और उस मैदान की गंदगी साफ की जाए और वहां एक नोटिस लगा दिया जाए, जिससे मैदान में गंदगी करना लोग बंद कर दें। तभी इस गंदगी से छुटकारा मिल सकेगा और हम बच्चे फिर से उस मैदान में खेलकूद सकेंगे।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को भी मिले बहादुरी पुरस्कार

पृष्ठ 1 का शेष

गया और बड़ी बहादुरी से उनका सामना किया और उस बच्चे की जान बचाई।

तुलसी और पूजा के प्रयास से दो छोटे बच्चों को आश्रय गृह में भेजा गया। इनके माता पिता का कार एक्सीडेंट में निधन हो गया था और भीलवाड़ा से भटकते हुए मथुरा रेलवे स्टेशन पर आ गए थे। जब तुलसी और पूजा को इसकी सूचना मिली तो इन्होंने बाल कल्याण समिति से संपर्क किया और उनकी मदद से दोनों बच्चों को आश्रय गृह भेज दिया गया। इसी प्रकार ये बच्चे न जाने कितनी बार अपनी जान जोखिम में डालकर कितने बच्चों की मदद करते हैं, लेकिन इनके कार्यों को कभी सराहा नहीं जाता है।

बढ़ते कदम संगठन सरकार से यह अपील करता है कि गणतंत्र दिवस के मौके पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बहादुरी को भी सम्मानित किया जाए।

माता पिता ने लड़कियों के स्कूल जाने पर लगाया प्रतिबंध

बालकनामा ब्यूरो

लड़कियों के माता पिता उनको स्कूल जाने से मना कर रहे हैं। जब पत्रकार को इस बात की भनक लगी तो पत्रकार लड़कियों से बात करने के लिए उनके घर पर गए। वहां पर पता चला कि लड़कियों को लड़के परेशान करते हैं उन से अश्लील ढंग से बात करते हैं। 16 वर्षीय परिवर्तित नाम बालिका ने बताया कि मेरे माता पिता मोची का कार्य करते हैं पर मुझे पढ़ाना चाहते हैं। ताकि मैं अपने माता पिता की तरह मोची का काम नहीं करूं। लेकिन हम लड़कियों का बहुत बुरा हाल है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि जब मैं घर से स्कूल के लिए निकलती हूं तो रास्ते में लड़के बहुत अभद्र बाते बोलते हैं। एक दिन पांच लड़कों ने हम तीन लड़कियों को घेर लिया और जो हम स्कूल का ड्रेस पहनते हैं वह हल्की छोटी होती है तो वह लड़के बोल रहे थे कि अगर ये ड्रेस थोड़ी छोटी और होती तो बहुत मजा आता। ऐसे ही रोज बोलते हैं। इसलिए हमारे माता पिता स्कूल नहीं जाने देते हैं। और ये लड़के बहुत सारी लड़कियों को परेशान करते हैं। पहले तो लड़कियों को लालच देकर दोस्ती करते हैं। कुछ दिनों तक उनके साथ अश्लील हरकत करते हैं। जब वह गर्भवती हो जाती हैं तो लड़के शादी करने से माना कर देते हैं और वह लड़कियों से बोलते हैं कि बच्चे को गिरा दो।

पत्रकार ने इसकी पुष्टि की तो पता चला कि एक महीने में तीन बच्चों की लासे मिली । इन लड़कियों की उम्र 16 से 17 साल है। पत्रकार ऐसे ही एक लड़की से मिली जो इस घटना का शिकार हो चुकी है। उसने बताया कि किस प्रकार उसके साथ लड़के ने व्यवहार किया है।

बाल विवाह की शिकार होती लड़कियां

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा पत्रकार ने साउथ दिल्ली का दौरा किया तो पता चला कि साउथ दिल्ली में डोम जाति के लोग अधिक संख्या में रहते हैं। यह लोग अपने बच्चों की शादी बहुत छोटी उम्र में ही कर देते हैं। पत्रकार ने एक बालिका से पूछा तो उसने बताया कि हमारी डोम जाति में बच्चों की शादी बहुत छोटी उम्र में ही कर देते हैं जैसे ही बच्चा 15 से 16 साल तक होता है तभी उनकी शादी कर देते हैं। यह बात होश उड़ा देने वाली है कि बच्चों की इतनी कम उम्र में शादी कर दी जाती है। पत्रकार ने डोम जाति के एक ऐसी लड़की से मुलाकात की जिसकी शादी हो चुकी है। उस लड़की से पत्रकार ने बात करने की कोशिश की तो वह काफी डर गई। उसने पत्रकार से कहा कि आप मेरे से यह सब क्यों पूछ रहे हो? पत्रकार ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं एक अखाबार का पत्रकार हूं। जो बच्चों का ही अखबार है यह अखबार बच्चे खुद चलाते हैं। यह सुनकर वह लड़की काफी खुश हुई और पत्रकार को अपनी जाति के बारे मे पूरी तरह से बताया कि हमारी जाति में यह सदियों से चला आ रहा है जिसके भी घर में लड़कियां जन्म लेती हैं तो उसके माता पिता को लगता है कि मेरी बेटी की अगर मैंने शादी नहीं किया तो वह गलत कदम उठा लेगी। इसलिए इनके माता पिता छोटी उम्र में शादी कर देते हैं। 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि मेरे घर पर एक रिश्ता आया था, जो मेरे बारे में बात कर रहे थे कि आपकी बेटी को घर का कामकाज और खाना बनाना आता है तो मेरे माता पिता ने उनसे झूठ बोला कि हमारी बेटी को सब कुछ करना आता है। वह पूरे घर का काम संभालती है लेकिन मुझे कुछ नहीं आता है।

जब मैंने अपनी मम्मी से पूछा कि आप लोगों ने उनसे झूठ क्यों बोला तो मेरी मम्मी ने बताया कि अगर मैं झूठ नहीं बोलूंगी तो तेरी शादी कैसे होगी। 5 महीने बाद जब मेरी शादी हुई तो मेरी सासू मां ने मुझसे रोटी बनाने के लिए बोला तो मैं घबरा गई। मैंने सोचा कि अब मैं रोटी कैसे बनाउंगी। जब मैंने खाना नहीं बनाया तो मेरी सासू मां ने मुझे बहुत तेज हाथ पर मारा और मेरे पति का भी व्यवहार मेरे प्रति ठीक नहीं रहता है क्योंकि मुझे अभी ठीक से घर का काम करना नहीं आता है। बालिका ने कहा कि हमारे यहां इसी प्रकार झूठ बोलकर शादी कर दी जाती है बहुत ऐसी लड़कियां हैं, जिनकी उम्र 14 से 15 साल है। इतनी कम उम्र में ही उनकी शादी कर दी गई और वह अब अपने ससुराल में सिर्फ मार खाती रहती हैं, क्योंकि उन्हें घर का काम तो आता नहीं है। और कम उम्र में ही वह बच्चों की मां भी बन जाती हैं। इतनी बडी जिम्मेदारी एक छोटी बच्ची आखिर कैसे निभाए। हम लड़कियां चाहती हैं कि सदियों से चले आ रहे रीति रिवाज बंद कर देने चाहिए, क्योंकि इन रीति रिवाजों के चक्कर में हम बच्चों की जिंदगी खराब हो रही है।

नशा छोड़कर बढ़ाए कदम पढ़ाई की ओर

बातूनी रिपोर्टर, रोहित रिपोर्टर शम्भू

15 वर्षीय रोहित जो दो साल पहले अपने गांव मुकनपुर में रहता था। रोहित के पापा गांव में कुछ काम नहीं करते थे। वह हमेशा घर पर जुआं ही खेलते रहते थे और मम्मी घर का खर्चा चलाने के लिए बेलदारी का काम करती थी। रोहित की मम्मी जब भी काम पर से आती थी तो काम का गुस्सा अपने बेटे रोहित पर ही निकालती थी। एक दिन रोहित की मम्मी के मालिक ने एक महने की पगार नहीं दी तो रोहित की मम्मी ने गुस्से में घर पर आकर रोहित को बहुत मारा।

उसके बाद रोहित घर से भागकर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आ गया। यहां आने के बाद रोहित पूरे दिन रेलवे स्टेशन पर भूखा प्यासा पड़ा रहा। जब उससे भूखा प्यासा नहीं रहा गया तो वह गाड़ियों में जाकर भीख मांगने लगा पर उसे किसी से पैसे नहीं मिले। तब उसने देखा कि दूसरे बच्चे झाड़ू लगाकर भीख मांग रहे थे तो रोहित ने भी इसी तरह भीख मांगने का काम शुरू किया और अपना पेट पालने लगा। इसी दौरान दूसरे बच्चों ने रोहित को नशा करना भी सिखा दिया। रोहित इतना नशा करने लगा कि

उसको कोई होश नहीं रहता था। रोहित जब चेतना कार्यकर्ता को मिला तो उन्होंने रोहित से बात की। रोहित को समझाया कि आप इतना नशा मत करो और मैं आप ही जैसे बच्चों को जीआरपी थाने के पास पढ़ाता हूं। आप भी वहां पर रोज पढ़ाई करने आ सकते हो। कुछ दिनों बाद रोहित चेतना कार्यकर्ता के पास पढ़ाई करने जाने लगा। अब रोहित ने नशा करना बहुत कम कर दिया है और रोज पढ़ाई करने के लिए आता है। रोज रेलगाड़ी में झाड़ू लगाने का काम करता है। कार्यकर्ता के एक कदम ने रोहित को शिक्षा से जोड़ा है। आप भी इसी तरह बच्चों की मदद करके उन्हें शिक्षा से जोड़ सकते हैं।

कंडे बेचकर अपने भाई बहनों को पढ़ा रही है मल्ला

बातूनी रिपोर्टर मल्ला, रिपोर्टर पूनम

15 वर्षीय मल्ला अपने माता पिता के साथ आगरा में रहती है। मल्ला के पिता पूरे दिन शराब के नशे में डूबे रहत हैं। माता हमेशा बीमार रहती हैं, क्योंकि वह इतनी बुजुर्ग हो गई हैं कि अपने बच्चों का ख्याल भी नहीं रख पाती हैं। पिता थोड़ा ठीक हैं पर वह नशे में ही रहते हैं। उनसे बोलते हैं कि आप काम करने के लिए चले जाओ लेकिन वह नहीं जाते हैं। घर में गाली गलौज करते रहते हैं। इसलिए मल्ला अपनी पढ़ाई लिखाई छोड़कर घर में ही रहती है और घर का खर्चा चलाने के लिए गोबर के कन्डे बनाने का काम करती है। उसके बनाए हुए कन्डे को बेचकर जो पैसे आते हैं, वह अपने घर के खाना खर्च में लगाती है। लेकिन दुख की बात यह है कि जहां पर मल्ला कन्डे बनाती है, वहां कुछ लोग ऐसे हैं जो कन्डे को चोरी कर लेते हैं इसलिए वह हमेशा रोती रहती है।

जब पत्रकार ने मल्ला से बातचीत की तो मल्ला ने बताया कि मेरे कन्डे यहां पर रहने वाले लोग चोरी कर लेते हैं और मैंने पुलिस थाने में भी शिकायत दर्ज की पर कुछ नहीं हुआ। वह मुझे बोले कि तुम यहां से जाओ मैं एक कन्डे की रिपोर्ट दर्ज नहीं कर सकता हूं। मल्ला ने पुलिस वाले भइया के सामने रोते हुए कहा कि मैं इसी कन्डे को बेचकर अपने बहन भाई को स्कूल भेजती हूं। अगर आप मेरी मदद नही करोगे तो कौन करेगा। पर मल्ला की किसी ने मदद नहीं की। उसके बाद मल्ला ने अपनी सारी परेशानी पत्रकार को बताई कि रोज रात को मेरे कन्डे चोरी हो जाते हैं। मैंने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज की, पर किसी ने मदद नहीं की। आप ही मेरी मदद कीजिए।

फिर पत्रकार ने मल्ला को चाल्डलाइन के बारे में बताया और कहा कि आपको जो भी परेशानी हो वो आप खुलकर 1098 चाइल्डलाइन को बोल सकते हो और साथ ही बाल अधिकार के बारे में बताया कि हम बच्चों का अधिकार है कि जब हमें कोई परेशान करता है तो 1098 पर कॉल कर सकते हैं।

भीख मांगने वाले 25 बच्चों से बड़े लड़के करते हैं दादागिरी और छीन लेते हैं उनके पैसे

बातूनी रिपोर्टर प्रियंका, रिपोर्टर पूनम

आगरा कैन्ट में अधिकतर बच्चे भीख मांगने का काम करते हैं। जब पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि मालवाड़ी गांव में 25 बच्चे ऐसे हैं जो भीख ही मांगते हैं। उसके अलावा कोई और काम नहीं करते हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि जब बच्चे पूरे दिन मेहनत करके पैसे मांगते हैं और वहां पर कुछ बड़े लड़के हैं जो अपनी दादागिरी करते हैं और छोटे बच्चों को परेशान करते हैं। अगर पैसे नहीं देते हैं तो मारपीट करके सारे पैसे छीन लेते हैं। यह घटना काफी महीनों से चलती आ रही है। 14 वर्षीय बालिका ने बताया कि उन लड़कों का यह रोज का काम है। वह लड़के कुछ काम धंधा तो करते नहीं है बस शाम के समय जब हम बच्चे घर जा रहे होते हैं तो आते हैं पहले तो प्यार से बोलते हैं कि बाबू कुछ पैसे दे दो खाने के लिए। जब हम बच्चे मना करते हैं तो वह हमारे साथ मारपीट करने लगते हैं और सारे के सारे पैसे भी छीन लेते हैं। पर कोई कुछ नहीं कहता है। एक दिन हम बच्चों ने पुलिस अंकल से शिकायत की, पर उन्होंने भी कुछ नहीं बोला।

जब हम बच्चे घर जाते हैं रोते हुए तो माता पिता भी हम से सही से बात तक नहीं करते हैं। वह बोलते हैं कि तुम लोग सही से मांगते ही नहीं हो और झूठ बोलते हो कि किसी ने पैसे छीन लिए। कभी कभी तो खाना भी नहीं देते हैं। हम बच्चों को रात को भूखे ही सोना पड़ता है। इस परेशानी से हम बच्चे छुटकारा पाना चाहते हैं कि कोई भईया दीदी हम बच्चों की मदद करे, ताकि हम बच्चों को भीख मांगने न जाना पड़े।

''मेरा एक छोटा भाई है जो मेरे माता पिता की मृत्यु के बाद से नशा करने लगा। उसको हम लोगों ने बहुत समझाया पर वह हमारी बात नहीं सुनता। इसलिए मैं चाहती हूं कि मैं अपने भाई को सुरक्षित सेंटर भेज दूं, ताकि वह गलत कदम नहीं उठाए।''

सेंटर होम में भेजना चाहती हूं आपने भाई को: आरती

बातूनी रिपोर्टर आरती, रिपोर्टर ज्योति

11 वर्षीय आरती जो अपने चाचा चाची के साथ लोधी रोड के पास एक झुग्गी में रहती है। आरती ने पत्रकार को बताया कि वह तीन बहन और दो भाई हैं। आरती ने यह भी बताया कि जब मैं छोटी थी तब मेरे माता पिता की मृत्यु हो गई। जब से हम भाई बहन को देखने वाला कोई नही था। पर ऐसे हालत में मेरी चाची जी ने हम भाई बहनों का हाथ थामा और अपने साथ रखने का फैसला लिया। चाची तो हमें अपने बच्चों की तरह मानती हैं। उन्होंने मेरे भाई बहनों का सरकारी स्कूल में भी दाखिला करा दिया है। हम लोग रोज पढ़ाई करने स्कूल जाने लगे हैं। मेरी चाची दूसरे के घरों में काम करने जाते हैं। आरती के चाचा चाची उसके भाई बहनो का खाना खर्चा खुद उठाते हैं। इसलिए आरती भी अपने भाई बहनों के खर्चे में हाथ बंटाने के लिए लोधी रोड सांई बाबा मंदिर में जो लोग दर्शन के लिए आते हैं वह उनके जूते चप्पल स्टैंड में संभालकर रखती है और उसके बदले में आरती को दो तीन रूप्ए मिल जाते हैं। वहां पर कुछ बड़े लोग ऐसे भी हैं जो बच्चों को अपने पुराने कपड़े दे जाते हैं। वह कपड़े मेरे भाई बहन के काम आते हैं। आरती ने अपनी एक और बात बताते हुए कहा कि मेरा एक छोटा भाई है जो मेरे माता पिता की मृत्यु के बाद से नशा करने लगा। उसको हम लोगों ने बहुत समझाया पर वह हमारी बात नहीं सुनता। नशा करने के लिए वह किसी भी प्रकार के काम करने के लिए तैयार हो जाता है। अगर उसे कोई बोले कि मैं तुझे नशा लाकर दूंगा तुम मेरा यह काम कर दो तो वह तैयार हो जाता है। इसलिए मैं चाहती हूं कि मैं अपने भाई को सुरक्षित सेंटर भेज दूं, ताकि वह गलत कदम नहीं उठाए।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

आओ करें ठंड से ठिटुरते हुए बच्चों की मदद

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए कराया गया बाल भवन का भ्रमण

स्कूल वॉल मैगज़ीन में लगा रहे बच्चे अपने मन की बात

अपनी खबरों को पढ़ते हुए रिपोर्टर

रेड लाईट पर काम करने वाले बच्चों को जीवन कौशल कार्यशाला देते हुए बताया कि कैसे कहें ना

टाइम्स ऑफ इंडिया में छपी खबर

भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बालकनामा की संपादकीय टीम की सदस्य सुश्री शन्नो पठान को राष्ट्रीय बालिका दिवस के कार्यक्रम में अपने विचार रखने हेतु आमंत्रित किया.

केसीएल कॉलेज की प्रिंसिपल रीना जैन बालकनामा को प्राप्त करते हुए

केसीएल इंटर कॉलेज पाथोली आगरा के पास पहुंचा बालकनामा

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471